શ્રી
ગરસૂરિ
દિર
ીનગર

॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष २८ अंक १ अप्रैल २००४

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २८ अंक - १, अप्रैल, २००४

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, e-mail : jbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 100.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 300.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 2000.00, Foreign : US$ 185.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-2268-2655. e-mail - jbhawan@vsnl.net

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	नैतिक उपयोगितावाद— महावीर-दर्शन के आलोक में	लता बोथरा	५
२.	तेजस्काय के जीव	डॉ० जीवराज जैन	२१
३.	श्रीचन्द्रराज चरित्र		२८

मूल्य - ५.०० रूपये

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

नैतिक उपयोगितावाद — महावीर-दर्शन के आलोक में

हमारी मान्यताएँ, हमारे सिद्धान्त, सत्य और विज्ञान की कसौटी पर पूर्णतया खरे हैं जिसका श्रेय तीर्थंकरों की साधना और ज्ञान को जाता है जिन्होंने अपने तप, त्याग और साधना के द्वारा परिपूर्ण ज्ञान (केवलज्ञान) अर्जन किया। जब कोई भव्य आत्मा कर्म के आवरणों को निःशेष कर देती है तो भूत वर्तमान और भविष्य उन्हें स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगते हैं। उत्तराध्ययन में भगवान् महावीर के ज्ञान के विषय में लिखा है।

"खेयन्ने से कुसले महेसी, अणंत णाणी या अणंत दंसी
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि।।"

भगवान् महावीर संसारी जीवों के दुखों को जानने में कुशल थे। वे अनन्त ज्ञानी, अनन्तदर्शी और महान् ऋषि थे। उन्होंने ऊँची-नीची तिरछी दिशाओं में जो त्रस और स्थावर प्राणी है, उनके नित्य और अनित्य रूप को जान कर, उनके आधार के लिये सम्यक् रूप से सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। सर्वज्ञ होने के पश्चात् उन्होंने सनातन और शाश्वत सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर विश्व को एक ऐसी समन्वित जीवनशैली दी जो आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों क्षेत्रों में उत्कर्षता प्राप्त कराती है। त्याग और भोग के मध्य संतुलित जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करती है। आचार्य सामन्तभद्र भगवान् महावीर की स्तुति करते हुए आत्म मीमांसा में कहते है **"देवागम मुभैयादि चामरादयः विभुतयः। मायाष्वपि दृश्यन्तेनातस्वतवमपि ते महान। सत्वमेवसरित निर्दोषो युक्तिशास्त्रविरोधिवाक् अविरोधो यदिष्ट ते प्रसिद्धेन नो बाध्यत"** अर्थात् हे भगवन्, आपके पास देवों का आगमन होता था, छत्र चामर की विभुति थी, इन कारणों से आप महान् नहीं थे। देवों का आगमन मायावी पुरुष के पास भी हो सकता है, परन्तु आप महान् इसलिये थे क्योंकि आपकी वाणी में यथार्थ था, आप अन्यथा भाषी नहीं थे,

रागादि दोषों से रहित थे। भगवान् महावीर यथार्थवादी थे। हेमचन्द्राचार्य आदि आचार्यों ने भी भगवान् के यथार्थवाद को निर्विवाद गुण माना है। महावीर ने सर्वज्ञ होने के बाद यथार्थवाद को जनता के सामने रखा। उनके बताये सिद्धान्त मात्र धर्म-दर्शन नहीं, वरन् मन्दिर से बाजार, घर से दफ्तर, धर्मस्थल से वाणिज्य व्यापार, औद्योगिक क्षेत्र से शासन व्यवस्था, राष्ट्रों से अन्तरराष्ट्रीय जगत की समस्याओं में तथा व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में सफलता का अमोघ सूत्र है।

आज से २६०० वर्ष पूर्व भगवान् महावीर ने जीव के सर्वांगीण विकास का जो मार्ग विश्व को दिया उसमें जीवन के सभी क्षेत्रों की समस्याओं का निदान निहित था। न तो वह कोई राजनैतिक दर्शन था न कोई आर्थिक योंजना थी। इन्होंने यथाशक्ति पंच महाव्रत के पालन एवं अनेकान्तवाद का समावेष करके समस्त पहलुओं का हल दिया। अरस्तू और प्लेटो जैसे मनीषी जब सुदूर यूनान में जैन धर्म के प्रचारकों से ज्ञान **प्राप्त कर Republic नामक पुस्तक एवं अपनी बौद्धिक** कथाओं में जनकल्याण के लिये राजनैतिक दर्शन देने का प्रयास कर रहे थे तो वे केवल महावीर के सिद्धान्तों के गौण पहलुओं को ही छू पा रहे थे। प्लेटो ने अपनी Republic नामक किताब में शासन वर्ग के लिये संग्रह और आसक्ति से दूर रहने के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया । **जो अपरिग्रह** और **ब्रह्मचर्य** के सिद्धान्तों को प्रतिफलित करता है। उसके बाद यूरोप के दार्शनिकों में इन सूत्रों में से सामाजिक दर्शन खोजने की बाढ़ सी आ गई और अपने-अपने सम्प्रदाय और परिवेश के अनुसार उन्होंने इन सिद्धान्तों को अपने ढंग से रखने का प्रयास किया। चर्च ने इसे अपनी शक्ति के विस्तार का माध्यम बनाने का प्रयास किया तो **कार्ल मार्क्स** ने इसे सर्वहारा वर्ग की शक्ति का द्योतक माना। विश्व स्तब्ध रह गया जब फ्रांस के दार्शनिक **'जाँ जाक रूसो'** ने महावीर के सम्पूर्ण दर्शन को दो पक्तियों में कहने का प्रयास किया जो उस समय की लीक से अलग था— **मनुष्य स्वतन्त्र पैदा होता है सर्वत्र जंजीरों में हर समय जकड़ा हुआ है।** भगवान् महावीर ने

भी तो यही कहा था कि आत्मा के नैसर्गिक गुण ही वास्तविक धर्म हैं परन्तु जीव कर्मों का कर्त्ता भी है और भोक्ता भी इसलिये कर्मों की यह बेड़ियाँ उसकी आत्मा के चरम स्वरूप को प्राप्त करने में बाधक है। यदि सत्य कहा जाये तो विश्व के दार्शनिक विचारों के मंच पर यह पहला प्रयास था जब किसी दार्शनिक ने महावीर के दर्शन को रखने का प्रयास किया था। विश्व के चेतना केन्द्रों में एक अजीव हलचल सी पैदा हो गयी थी। मानव के विकास के लिये आवश्यक सिद्धान्तों के पक्षधरों ने रूसों के इस कथन का सही विश्लेषण विश्व के सामने रखा। गैटेसवर्ग के भाषण में **लिंकन** ने प्रजातंत्र की परिभाषा दी और कहा, **यह प्रणाली लोगों की लोगों के लिए हैं** और लोगों के द्वारा है। महावीर के समानता के सिद्धान्त का यह प्रबल पुजारी अपने ही देश में गुलामी के विरूद्ध निर्णायक युद्ध जीत कर प्रजातन्त्र का मार्ग प्रशस्त कर चुका था। उनके प्रसिद्ध शब्द थे— **"मैं किसी का दास बनना नहीं पसन्द करता पर में किसी का स्वामी भी नहीं बनना चाहता। दुर्भाव किसी के प्रति नहीं उदारता सभी के प्रति प्रभु द्वारा दिखाये मार्ग पर दृढ़ता के साथ चलने की प्रतिबद्धता पर मृत्यु पर्यन्त इसी भावना से लिंकन जुड़े रहे ।"**

'धर्म जहाँ मानव जीवन के लिये राह दिखाता है तो उस पर चलने की प्रेरणा संस्कृति प्रदान करती है। लोक व्यवहार के नियम धर्म बनाता है और संस्कृति उस पर नियन्त्रण करती है। जैन धर्म लोक जीवन का नियमन करते हुए जब उनका नियन्त्रण करता है तब उसका विशुद्ध संस्कृतिक स्वरूप निखर आता है इस सांस्कृतिक स्वरूप का निखार युगों-युगों के प्रयोगात्मक परिष्कार का परिणाम है।' परिष्कार की इस प्रक्रिया का सूत्रपात सृष्टि के प्रारम्भ से आरम्भ हुआ। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने पुरुषों को ७२ कलाएँ तथा स्त्रियों को ६४ कलाओं की शिक्षा दी। उनमें सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के सिद्धान्तों का समावेश किया। उनके बाद इन तत्त्वों को विकसित एवं समय समय पर परिष्कार करने का श्रेय तीर्थंकरों को जाता

है। ये सभी तत्त्व एक दूसरे के पूरक तथा मानव जीवन के लोकव्यवहार के आधारभूत तत्त्व हैं जिन्हें महाव्रतों का नाम दिया गया।

औद्योगिकरण और यांत्रिकीकरण के इस युग में हम अपने प्रति दूसरों से संवेदना और सहायता की आकांक्षा रखते है। लेकिन दूसरों की इच्छाओं, आवश्यकताओं और भावनाओं के प्रति हम संवेदनशील नहीं है। आजकल अधिकांश व्यक्ति डिप्रेशन में रहते हैं। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक चिकित्सक आल्फ्रेड एडलर ने कहा कि मात्र चौदह दिनों में इसका उपचार हो सकता है यदि व्यक्ति प्रतिदिन कोई ऐसा काम करे जिससे किसी दूसरे व्यक्ति के मुख पर संतुष्टि की मुस्कान आ जाये। भगवान् महावीर का यह संदेश **'जैसा तुम अपने लिये चाहते हो वैसा दूसरों के लिये चाहो'** इस शताब्दी में मानवीय चेतना को जागृत करने और समस्त मनोरोगों की औषधि है। भगवान् महावीर ने अपने जीवन से अपने चारों ओर व्याप्त पर्यावरण को जरा भी क्षतिग्रस्त या पीड़ित करने को, जीवों के प्रति असंवेदित व्यंवहार को उनकी पीड़ा की उपेक्षा कर जीने मात्र को भयानक हिंसा माना है। संवेदनाओं का अभाव हिंसा को जन्म देता है। अतः "संवेदनशील ही मुक्त हो सकता है, असंवेदनशील नहीं," इस मंतव्य में भगवान् महावीर ने विश्व मानवता का जो मार्ग प्रेरित किया वही अणुशस्त्रों से आतंकित, आतंकवाद से ग्रसित मानवता का अन्तिम त्राण है।

व्यवसाय और विज्ञापनों के क्षेत्र में जो व्यक्ति या संस्थान दूसरे क्या चाहते हैं इस बात को ध्यान में रखकर अपने को प्रस्तुत करते हैं वहीं विज्ञापन या व्यापार सफल हो सकता है, लेकिन अगर यह झूठ और छल पर टिका है तो उसके बल पर कोई भी उद्योग या व्यवसाय कुछ समय तक तो टिका रह सकता है अंततः इसका पतन स्वाभाविक है। सत्य की राह कठिन जरूर है लेकिन स्थायी तथा दृढ़ नींव बनाती है। राजनीति से लेकर औद्योगिक जगत तक सत्य और अचौर्य की अवहेलना कर बनायी गयी इमारतें बालू की भीत पर टिकी हुई दिखायी पड़ती है।

भगवान् महावीर जानते थे कि मानव सभ्यता और संस्कृति के सर्वांर्गीण विकास के लिये मनुष्य की आयु का काल बहुत कम है अतः उन्होंने मानव को चेतावनी दी कि वह एक क्षण भी बर्बाद न करके सर्वांगीण विकास के लिये प्रयत्न करे। उन्होंने अपने उपदेशों में स्पष्ट रूप से कहा :-

'दूमपत्तए पंडुयए जहा, निवइइ राइगणाण अच्चए

एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम मा पमायए'

जिस प्रकार रात्रि के बीत जाने पर वृक्ष का पत्ता पीला होकर गिर जाता है, **'कुसग्गे जह ओसबिंदुए, थोवं चिडुइ लंब माणए'** — जिस प्रकार कुश के अग्रभाग पर रही हुई ओंस की बूँदे थोड़े समय ही ठहरती है उसी प्रकार मनुष्यों का जीवन है, अतः हे गौतम क्षण भर भी प्रमाद मत करो।

'इह इत्तरियम्मि आउए, जीवियए बहुपच्च वायऐ, विडुणाहि रयं पुरे कडं'— थोड़ी आयु और अनेक विघ्न वाले इस जीवन में क्षण भर भी हे गौतम! प्रमाद मत करो। यह पढ़कर ऐसा लगता है कि आदि संस्कृति का यह मूल मंत्र आगे चलकर मनुष्य के सारे क्रियाकलापों की आधार शिला बनने वाला था और वास्तव में यह हो भी गया। उद्योग व वाणिज्य के क्षेत्र में विश्वविख्यात विद्वान Peter F. Drucker **और नेपोलियन हिल** जैसे मनीषियों ने जब प्रमाद को दूर रखकर समय के एक-एक क्षण का समुचित उपयोग करने की सलाह देते हैं तो वो वास्तव में आदि संस्कृति के इसी सूत्र को दोहरा रहे थे। २ सेन्ट की नोट बुक पर दिन भर किये जाने वाले कार्यों की तालिका और उसके अनुरूप कार्यों का सम्पादन समय की उपयोगिता निश्चित करने का एक सशक्त साधन बन गया। महान राजनीतिज्ञों की सफलता का भी यह सूत्र था। वर्तमान जर्मनी का गठन करने वाले प्रिन्स विसमार्क एक क्षण भी समय बर्बाद नहीं करते थे। बाईबिल की पुस्तक में रखे हुए एक कागज पर उनके सारे कार्य लिखे होते थे। बड़े-बड़े शासन कर्त्ताओं, बड़े बड़े राजनीतिज्ञों, कुशल उद्योगों के प्रबन्धकों सभी की सफलता में समय की उपयोगिता के इस सूत्र ने आश्चर्यजनक परिणाम दिखाया। बीता हुआ समय फिर वापिस नहीं आता। समय की उपयोगिता की इस अहमियत को

हमारे आदि मनीषियों ने उस समय ही जान ली थी और यही कारण था कि उन्होंने इस सिद्धान्त का इतनी प्रखरता के साथ प्रतिपादन किया।

भगवान् महावीर ने समय की उपयोगिता की मीमांसा में सूर्योदय के ४८ मिनट पहले ब्रह्म मुहुर्त्त में कार्य शुरू करने की अनुशंसा की थी। डॉ. लियर्ड की किताब में जब मैंने उनके द्वारा दिया गया सुबह के समय ऊर्जा का स्तर पढ़ा तो २६०० वर्ष पूर्व वर्णित भगवान् महावीर के सिद्धान्तों की सार्थकता सामने आ गयी। उर्जा के स्तरों का विश्लेषण करते हुए डॉ. लियर्ड के अनुसार इस विषय पर किये गये अनुसंधान से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि उर्जा का स्तर प्रातः काल में काफी ऊंचा रहता है। डॉ. लियर्ड ने सिर्फ अनुसंधान ही नहीं किया बल्कि ब्रह्म-बेला में कार्य शुरू करने वाले विश्व के अति सफल व्यक्तियों के जीवन के विषय में भी काफी प्रकाश डाला जो अपनी इस आदत के कारण उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचे थे।

भगवान् महावीर की सारी आचार व्यवस्था आत्म विकास के लिये थी और आत्म विकास द्वारा ही मनुष्य जीवन सफल बन सकता है आचारांग में महावीर ने कहा— **'पुरिसा तुममेव मितं किं बहिया मितमिच्छसी'**— अर्थात् हे मनुष्य! तू ही तेरा मित्र है बाहर क्या खोजता है। भगवान महावीर ने आत्म विकास के लिये उपवास और ध्यान को समान रूप से लिया। आज के डाक्टर और वैज्ञानिक अनेक रोगों से छुटकारा पाने के लिये ध्यान पर जोर देते हैं वहीं तीर्थंकरों ने सामायिक प्रतिक्रमण के रूप में ध्यान का उपदेश हजारों वर्ष पूर्व दिया था। (गृहस्थ के लिये) **'ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाण वोसिरामि'**– अर्थात् शरीर से स्थिर होकर वाणी से मौन होकर मन को ध्यान में नियोजित कर शरीर के प्रति ममत्व का परित्याग करता हूँ, ध्यान द्वारा आत्मा को बांधने वाले कषायों की सब ग्रन्थियां खुल जाती है यही सही रूप में साधना है जिसका लोककल्याण के लिये तीर्थंकरों ने उपदेश दिया। शरीर की शुद्धि, इन्द्रियों का निग्रह और आत्मा के नैसर्गिक गुणों के विकास के लिये तपस्या और साधना की आवश्यकता को आज के दार्शनिक भी मानते है। नेपोलियन हिल जैसे विचारक जब व्यक्ति के

सर्वांगीण विकास की बात करते हैं तो 'वे स्वस्थ मन के लिये स्वस्थ शरीर' को भी आवश्यक मानते हैं। स्वस्थ मन सर्वांगीण विकास का प्रथम सोपान है और इसकी प्राप्ति के लिये करोड़ों रूपया खर्चा किया जा रहा है। विपश्यना, प्रेक्षाध्यान आदि प्रक्रिया की बढ़ती लोकप्रियता से यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि जो नियम २६०० वर्ष पहले भगवान महावीर ने आत्मविकास के क्षेत्र में अपरिहार्य माने थे, वही आज समय के अन्तराल में भौतिक जीवन की आधार शिला भी बन गये है।

आदि संस्कृति ने हजारों वर्षों पहले इस आवश्यकता को समझ लिया था। इसमें समय के अन्तराल में आयी शिथिलताओं को महावीर ने झकझोरा और समता की प्राप्ति हेतु ध्यान की प्रक्रिया को परिमार्जित कर उसका जीवन में उपयोग बताया। संसार की सारी साधना और ध्यान का केन्द्र बिन्दु समता है। जहाँ न राग है न द्वेष केवल चित्त की एकाग्रता है, 'सम्माइये धम्माइये' का प्रतिपादन कर एक ऐसी सरल क्रिया महावीर ने ही जिसकी सार्थकता आज भी बरकरार है।

भगवान् महावीर ने आत्मशुद्धि के नाम पर तपस्या की सिर्फ अनुशंसा ही नहीं की वरन् अपने जीवन में इसका पालन कर अपने अन्दर विलक्षण शक्ति की उत्पत्ति की। उनका जीवन चुम्बकीय आकर्षण शक्ति का प्रधान केन्द्र था और उनकी प्रतिफलन शक्ति इतनी प्रबल थी कि गौशालक जैसा साधक भी अपनी तेजोलेश्या के प्रयोग से उन्हें क्षति नहीं पहुँचा सका। विषधर सर्प उनको काट कर उनके शरीर से निकले रक्त में मीठे दूध की अनुभूति पा रहा था।

क्या आपने कभी सुना है कि कोई सफल उद्योगपति, या सफल राजनैतिक एवं महान विचारक जीभ की लोलुपता के शिकार हुए है? संतुलित भोजन, पेट के अवयवों को दीर्घविश्राम देना आज की वैज्ञानिक पद्धति के निर्देश हैं। जैन श्रावक खाने के समय की पाबन्दी पर जोर देते हैं। सूर्यास्त से पूर्व भोजन लेने की जैन धर्म की हजारों वर्षों प्राचीन इस परम्परा को हजारों वर्षों के अन्तराल के बाद आज का स्वास्थ्य विज्ञान भी

मान्यता देता है बड़ी बड़ी कम्पनियां अपने मैनेजरों को ध्यान की शैलियां सिखाकर उनके कार्यों में चुस्ती और बढ़ोतरी पाने में सफल हुई हैं। आज का प्रबन्धन इस तथ्य को स्वीकार करता है कि दृढ़ शक्ति, दूरदर्शिता और कार्य की गति जहां अच्छे प्रबन्धन की आवश्यकता है वहीं दूसरी ओर इनको प्राप्त करने के लिये चित्त की एकाग्रता और उसके लिये ध्यान की प्रक्रिया नितान्त आवश्यक है। यह आश्चर्य का विषय है कि जहाँ एक ओर ध्यान की प्रक्रिया जीव को चिर शान्ति प्रदान करती है वहीं दूसरी ओर भौतिक सुखों की प्राप्ति का भी एक सशक्त माध्यम है।

भगवान् महावीर ने गणधरों से लगाकर श्रुत केवली, आचार्य, उपाध्याय और साधु का प्रावधान करके हर स्तर पर इस प्रकार के लोगों का निर्माण किया जो अपनी मानसिक दक्षता के आधार पर उनके कार्यों को आगे बढ़ा सके। महावीर के ये सिद्धान्त भविष्य में आने वाले सुदृढ़ गणराज्यों की विचारधारा का सर्वोपरि दर्शन था। उन्होंने गणधरों से साधुओं तक प्रबन्धक तन्त्र बनाया जिसकी तुलना औद्योगिक क्षेत्र में निकाय प्रबन्धन के मास्टर माइन्ड ग्रूप जिनका उद्योगों की सफलता के पीछे बहुत बड़ा योगदान रहता है, सहज ही की जा सकती है। पिटर एफ ड्रूकर ने इस विषय में लिखते हुए कहा है कि अपनी मानसिक विचार धारा और अपनी कार्यशैली के प्रति प्रतिबद्ध लोगों का चयन करके एक ऐसे ग्रुप का निर्माण किया जाता है जो शासन तथा उद्योगों के सारे कार्य सुचारू रूप से सम्पादित कर सफलता अर्जित करते है। भगवान् महावीर के पश्चात् धर्म सभाओं का आयोजन तथा श्रुतकेवलियों से लगाकर श्रमणों की भागेदारी ने समय समय पर वैचारिक एवं सैद्धान्तिक क्रान्ति की धारा को अक्षुण्ण रखा। यही कारण है महावीर के इस प्रबन्धन तन्त्र का सिद्धान्त हर सफल शासन व्यवस्था का अंग बन चुका है। भगवान् महावीर ने स्वयं व्यवस्था की वकालत नहीं करके उसके लिये एक ऐसा दर्शन, आचार संहिता एवं पारदर्शी शैली दी जो शत प्रतिशत अनादि भारतीय चिन्तन की देन थी। उसे प्रतिपादित किया।

विश्व के राजनैतिक दर्शन के इतिहास के अवलोकन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि भगवान् महावीर के पंच महाव्रत एवं राजनैतिक और सामाजिक मतभेदों को दूर करने की कुंजी अनेकान्तवाद प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था को चलाने का सुदृढ़ आधार केवल भारत में ही नहीं वरन् जहां जहां नगर राज्यों का विकास हुआ वहां वहां जैन प्रचारकों अथवा अन्य माध्यमों से इस विचार धारा ने उन देशों में अपनी सार्थकता सिद्ध की।

भगवान् महावीर ने समाज संस्कार के लिये साम्य व्यवस्था का प्रतिपादन किया। सब मनुष्य समान है, परिग्रह परिमाण संचय की सीमा का निर्धारण करना राष्ट्र के निर्देश या दण्ड के भय से नहीं वरन् स्वेच्छा से व्रत ग्रहण करके किया जा सकता है। उदाहरण के लिये महावीर का एकनिष्ठ अनुयायी आनन्द गृहपति जिसके पास अतुल सम्पत्ति थी— ४ गोव्रज थे, ४ करोड़ सम्पत्ति थी, ४ करोड़ स्वर्ण मुद्राएं जमीन में गढ़ी रहती थी, तथा ४ करोड़ ब्याज में। भगवान् महावीर से उसने पंच महाव्रतों, ३ गुणव्रतों और ४ शिक्षांव्रतों को ग्रहण किया जिसके फलस्वरूप निर्दिष्ट परिमाण के अतिरिक्त जितना भी धन अर्जित किया जाता है उसे समाज कल्याण के लिये व्यय कर देना होता है। उसे वह संग्रह नहीं करके रख सकता या उसका भोग नहीं कर सकता। धन के साथ साथ प्रत्येक वस्तु का परिग्रह परिमाण इसी प्रकार किया जाता है, अन्न वस्त्र आदि दैनिक उपयोग की वस्तुओं का भी परिमाण रखा जाता है। इन व्रतों के पालन का उद्देश्य सही रूप में लोक कल्याण तथा लोकतन्त्र की सफलता ही नहीं वरन् सामाजिक और आर्थिक और पर्यावरण की समस्या का भी उचित निदान है।

इस प्रकार यदि हम विश्व की आर्थिक समस्याओं पर दृष्टि डाले तो ऐसा लगता है कि भगवान् महावीर के अपरिग्रह के सिद्धान्त को जब जब विश्व ने भुलाया तब तब उसे विनाश के कगार पर खड़े पाया गया। भगवान् महावीर की 'जीयो और जीने दो' तथा 'परस्परोपग्रह जीवानाम' (सभी जीव एक दूसरे के सहयोगी है सभी का सह अस्तित्व है) के सिद्धान्त की अवहेलना १८वी सदी के अन्त तथा १९वीं शताब्दी के प्रारम्भ में औद्योगिक

क्रान्ति से उपजे व्यक्तिवाद ने की। फलस्वरूप विश्व को प्रथम महायुद्ध की विभीषिकाओं से गुजरना पड़ा। मानव का शोषण, साधनों का अनैतिक दोहन, उपनिवेषवाद की आड़ में साम्राज्यवादी सिद्धान्त शासन सूत्र की प्रभावी शैली बन गयी थी। लीग ऑफ नेशन्स की इसको रोक पाने में असमर्थता और इंग्लैण्ड के तत्कालीन प्रधान मंत्री चैम्बरलेन ने जब म्युनिख में घुटने टेक दिये तो विश्व का भविष्य द्वितीय महायुद्ध के आगोश में जा चुका था। यह केवल राष्ट्रों की दुर्दशा ही नहीं वरन् निकायों का प्रबन्धन भी इससे ग्रसित था और सन १९३८ की मन्दी में हजारों कंपनियों व उद्योग दुनिया के नक्शे से मिट गये। क्या हमने कभी यह कल्पना की थी कि किसी एक मनीषी के सिद्धान्त की अवहेलना विश्व के लिये इतना बड़ा संकट पैदा कर सकती है। हमने अपनी अक्षमताओं के फलस्वरूप इन सिद्धान्तों को भगवान् महावीर के सिद्धान्त न समझा हो परन्तु इससे सिद्धान्त की उपयोगिता या प्रासंगिकता पर कोई असर नहीं पड़ता।

भगवान् महावीर ने कहा कि समस्त दुःखों का कारण भोगासक्ति में है। उत्तराध्ययन सूत्र में उल्लेख है कि समस्त भौतिक और मानसिक दुःखों का मूल व्यक्ति की भोगासक्ति में है अतः भोग में संयम आवश्यक है। आत्मा वीर्य शक्ति से युक्त होती है इस शक्ति द्वारा आत्मा कोई भी क्रिया या प्रवृत्ति करने में सक्षम होती है खाना, पीना, सोना उठना चलना, विचारना आदि सभी क्रियाएं इसी शक्ति में निहित होती है। आत्मा में यदि यह शक्ति न हो तो वह निस्तेज होने लगती है। विषय वासना में संयम द्वारा आत्मा का वीर्य निरन्तर स्फुर्तिमान बना रहता है। वीर्य के पतन से आत्मा का पतन होता है। भोगो में संयम तथा चौथे व्रत का पालन में ही एड्स जैसे खतरनाक रोगों से बचने का निदान निहित है। चौथा अणुव्रत इस प्रकार है-

चौथे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमण विरईओ
आयरि अमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं
अपरिगाहिया इत्तर, अणंगवीवाह तित्व अणुरागे
चउत्थ वयस्सइ आरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं

चौथे अणुव्रत में अपनी स्त्री में संतोष रखने तथा पर स्त्रियों के साथ सम्बन्ध मन, वचन और काया द्वारा त्यागने का विधान है। इन्द्रियों का निग्रह ब्रह्मचर्य का आधारभूत सिद्धान्त है। संतुलित यौन जीवन आज समय की मांग बन गयी है। जब बड़े बड़े मनोवैज्ञानिक परामर्शदाता जब व्यक्तियों के जीवन की आदर्श शैली की चर्चा करते है तो अनुशासित यौन सम्बन्ध के महत्व के विषय में जरूर बताते है। अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति क्लिंटन तक को अपने अमर्यादित यौन सम्बन्धों को लेकर सिर्फ अमेरिका ही नहीं, विश्व जनसमूह का क्रोध और क्षोभ झेलना पड़ा था तथा अन्ततः इसका उन्होंने पश्चाताप भी किया जो एक शुभ संकेत है और भगवान् महावीर के चौथे व्रत ब्रह्मचर्य की उपयोगिता और व्यवहारिकता को सिद्ध करता है।

यथार्थवाद भगवान् महावीर के व्यक्तित्व का मापदण्ड था जिसके उज्ज्वल आलोक में उन्होंने अहिंसा के परमधर्म को पूर्णता तक पहुँचाया। उनकी देशना का सर्वोपरि तत्व अहिंसा था। उन्होंने कहा— **"जिसे तुम मारना चाहते हो वो तुम्हीं हो। सभी प्राणी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता सबको जीवन प्रिय है अतः किसी को मारो मत, दुःख मत पहुँचाओं, अपनी भावना में भी किसी के प्रति बुरा मत सोचो क्यों कि भाव हिंसा भी हिंसा है। चेतना के धरातल पर सभी प्राणी समूह चाहे वो एकेन्द्रिय हो या पंचेन्द्रिय सभी समान है, सभी की स्वतन्त्र सत्ता है।"** महावीर के शासन में एकेन्द्रिय जैसे अविकसित जीव भी सुरक्षित है कोई भी आत्म स्वतन्त्रता से वंचित नहीं है। विश्व में प्रेम अभय और विश्वास के लिये महावीर ने **'जीयो और जीने दो'** का उद्घोष किया था।

आज राजनैतिक और सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्थाओं की सफलता का सबसे बड़ा आधार है स्थायी शान्ति, जो भगवान् महावीर के सिद्धान्त ही विश्व को दे सकते थे। यह विश्व कल्याण का एक सशक्त पहलू था कि यूरोप के देशों में जब युद्ध के दौर से गुजर रहे थे तो यह सिद्धान्त मध्यपूर्व के दार्शनिकों के जरिये काफी हद तक वहाँ की मिट्टी में प्रस्फुटित हो चुके थे इसी

का परिणाम था, प्रथम महायुद्ध के बाद अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विलसन के प्रयासों से लीग ओफ नेशन्स की स्थापना। विलसन जानते थे कि युद्ध से स्थायी शान्ति प्राप्त नहीं की जा सकती है। लेकिन लीग ऑफ नेशन्स यदि विश्व को स्थायी शान्ति नहीं दे सकी तो इसका दोष इन सिद्धान्तों को नहीं वरन् उनके क्रियान्वयन को जाता है। विश्व के इन घटनाक्रमों में एक नया सैद्धान्तिक प्रयोग महावीर के सिद्धान्तों को आधार को मानकर गाँधीजी द्वारा किया गया। गाँधीजी ने पंचमहाव्रतों के आधार पर भारत में प्रजातन्त्र की बहाली के लिये अहिंसक संघर्ष प्रारम्भ किया। स्वतन्त्रता, भ्रातृत्व तथा सहअस्तित्व की बुनियाद पर रखी भारतीय प्रजातन्त्र की नींव का प्रमुख आधार भगवान् महावीर के शाश्वत तथा सनातन सिद्धान्त है जिसकी धुरी अहिंसा है। गाँधीजी के अनुसार- No religion of the world has explained the principle of Ahimsa so deeply and scientifically as is discussed in its applicability to every day life in Jainism. As and when the benevolent principle of Ahimsa or non violence will be searched for practice by the people of the world Jainism is sure to have the uppermost status and Lord Mahavira is sure to be respected as the greatest authority on Ahimsa.

भगवान् महावीर की अहिंसा को कायरता की संज्ञा देने वाले विश्व के कुछ विद्वान अहिंसा की सही परिभाषा खोजने के भ्रमजाल में सदियों तक पड़े रहे और इस बीच विश्व भूल गया अहिंसा का यथार्थ रूप। यदि विश्व ने हिटलर और मुसोलिनी के प्रति तुष्टिकरण की नीति अपनायी तो आगे चलकर द्वितीय विश्वयुद्ध के रूप में उसका परिणाम चुकाना भी पड़ा। यदि उद्योग, व्यापार-वाणिज्य में गलत नीतियों या गलत लोगों के सामने समर्पण किया तो वे सदा के लिये विश्व के नक्शे से मिट जाएगे। न्याय, सत्य, अहिंसा, अचौर्य और अपरिग्रह के भगवान् महावीर के सिद्धान्तों को जब-जब तिरोहित करने की कोशिश की गयी तब तब विश्व को इसकी कीमत चुकानी पड़ी।

आज परिवार 'समाज' राष्ट्र तथा विश्व में जो विविध संघर्ष दिखायी दे रहे है उनका मूल कारण एकांत आग्रह तथा अनेकान्त दृष्टि का अभाव है। अनेकान्त दर्शन जब जब गौण होने लगता है तो समस्याएं बढ़ने लगती है। एक अनेक सत् असत् के द्वन्द्वों से मुक्त होकर किसी भी तथ्य को सापेक्ष दृष्टि से परखने से संघर्ष के मूल कारणों का निराकरण हो जाता है। जो एक है वह अनेक भी है और जो अनेक है वह एक भी है। किसी का सोना अच्छा है तो किसी का जागना। इसी को और स्पष्ट करते हुए भगवान् महावीर ने कहा 'जो एक को जान लेता है वह सबको जान लेता है और सबको जान लेता है वो एक को जान लेता है।' इन परस्पर विरोधी बातों की सहायता से समाधान का सूत्र प्रस्तुत कर महावीर ने सभी के अस्तित्व को स्वीकार कर स्थायी विश्व शान्ति का मार्ग दिखाया। यही है वर्धमान का अनेकान्त दर्शन, विभिन्न मतमतान्तरों के मध्य एक मात्र समन्वय सूत्र, महावीर का अवदान, सर्वधर्म समन्वय की प्रथम उद्घोषणा, विश्व का अव़दान, सर्वधर्म समन्वय की प्रथम उद्घोषणा विश्व की समस्त समस्याओं का निदान— **आचार्य सिद्धसेन दिवाकर ने प्रभु की स्तुति करते हुए कहा— 'हे भगवान् जिस प्रकार समुद्र में सभी नदियाँ विलीन हो जाती है उसी प्रकार सभी दार्शनिकमत आपके सिद्धान्त में समाविष्ट है।' भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के शब्दों में— 'महावीर के जीवन में एक और तत्व हमें ग्रहण करना चाहिए वह है उनकी समन्वय दृष्टि।'**

युद्धों की विभीषिका से थकी दुनिया शान्ति की तलाश जब कर रही थी तो यह प्रयास चल रहा था कि सभी राष्ट्रों के प्रतिनिधि आपस में बैठकर ज्वलन्त समस्याओं का समाधान खोजे। यूरोप और अमेरिका का दर्शन जो प्लेटो और अरस्तू के दर्शन से बहुत कुछ सीख चुका था उसने आगे बढ़कर अनेकान्तवाद का सहारा लिया। ऐसे समय में जबकि आर्थिक साम्राज्यवाद तथा व्यक्तिवाद की आड़ में जनता का शोषण चरम सीमा तक पहुँच गया था तब समष्टि जीवन की पुनः स्थापना तथा आपसी विरोधों को अनेकान्तवाद

की सहिष्णुता के दायरे में लाकर उनका निराकरण करना समय की मांग बन चुकी थी। महावीर ने अपने आपको राजनीति से अलग रखकर श्रमणों के मध्य वैचारिक प्रश्नों के समाधान से लेकर जीवन के छोटे से छोटे एवं बड़े से बड़े क्षेत्र में पंच महाव्रतों तथा अनेकान्तवाद के प्रयोग की बात कही। उन्होंने इन सिद्धान्तों को पालन करने का निर्देश ही नहीं दिया बल्कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इनकी उपयोगिता बतायी। प्रथम महायुद्ध के बाद जहां एक ओर राजनैतिक नेताओं ने इन सिद्धान्तों की उपयोगिता को प्रधानता देने के बजाय जबरदस्ती मड़ने की कोशिश की वहीं दूसरी ओर कतिपय राष्ट्रों ने अपनी सार्वभौमिक सत्ता के विस्तार के लिये इनका दुरुपयोग किया। वुडरो विलसन के बाद अमेरिका मुख्य विचारधारा से अलग थलग पड़ गया । फ्रांस और इंग्लैण्ड के नेता तुष्टिकरण के मार्ग पर चल पड़े और हिटलर और मुसोलिनी ने सर्वश्रेष्ठ जाति का नारा देकर लाखों यहुदियों को मौत के घाट उतार दिया। इसी अनेकान्तवाद की आधारशिला पर राष्ट्रों में परस्पर विचार विनिमय के लिये बनी League of nations की जहाँ स्थापना की गयी थी, वहाँ साम्राज्यवाद के नाम पर महावीर के सिद्धान्तों को तिलांजलि दे दी गयी। फलस्वरूप विश्व ने एक ऐसे युद्ध की विभीषिका देखी जो इतिहास के पृष्ठों में सदैव के लिये मानव जाति के लिये कलंक बन गया। इंग्लैंड, फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल जैसे देश साम्राज्यवाद की दौड़ में जुट गये थे तथा उपनिवेशों की जनता का शोषण हो रहा था। अपने देश की जनता के हित में जर्मनी तथा अन्य राष्ट्रों ने जब इस नीति को देखा तो उन्होंने भी इस रास्ते को अपनाया। सन् १९४५ में बंगाल के अकाल में लाखों लोगों की जान गयी लेकिन ब्रिटिश सरकार को कोई असर नहीं पड़ा। जब जब विश्व ने महावीर के इन सिद्धान्तों की अवहेलना की तो उसे कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। अमेरिका के राष्ट्रपति रूज़वेल्ट तथा इग्लैण्ड के प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने इस युद्ध से सबक सीखकर इसबार साम्राज्यवाद के प्रसार के लिये नहीं, वरन् खोये हुए प्रजातन्त्रों की पुनः स्थापना एवं साम्राज्यवादी शोषण पर अंकुश लगाने के लिये तथा विश्व

के किसी भी हिस्से में अकाल महामारी या प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिये 'यू एन. ओ' की स्थापना की। यू. एन. ओ के चार्टर की घोषणाएँ यह इंगित करती हैं कि युद्ध की विभीषिकाओं से थके विश्व ने अबकी बार महावीर के सिद्धान्तों के प्रति सच्ची प्रतिबद्धता दिखाने का सही रूप में प्रयास किया था। C.N. Zutsi के शब्दों में **Jainism is rather a profound Philosophical thought, with a scientific approach to the problem of life, than a dogmatic relegion in the strict sense of the word that other relegions are. My deep conviction is that Jainism is a great religion of humanity, because its main guiding principle is Vishvamaitri (world friendship) with Charity for all and malice towards none.**

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कालचक्र का सर्वोपरि आयाम, हरपल का लेखा जोखा रखने की महावीर की अनुशंसा, तपस्या द्वारा शरीर और मन का विकास, निश्चित समय में सुपाच्य भोजन खाकर शरीर को सही ऊर्जा प्राप्त कराके दैनिक जीवन में उपलब्धियों की प्राप्ति। शासन तथा प्रबन्धन की सफलता के लिये प्रखर सहभागी लोगों के ग्रुप का निर्माण जो भगवान महावीर ने ज्ञान के प्रसार के लिये आज से २६०० वर्ष पहले भी किया था, ध्यान की प्रक्रिया द्वारा मानसिक विकास को तीव्र गति प्रदान करना, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पंच महाव्रतों के सिद्धान्तों और अनेकान्तवाद की उपयोगिता, ये सभी आवश्यकताएँ भगवान् महावीर ने २६०० वर्ष पहले ही समझ ली थी और उसके लिये व्यावहारिक ज्ञान ही नहीं बल्कि उसको असली जामा पहना कर विश्व के सामने रखा। हर युग में क्रान्तिकारी आते हैं, रास्ता दिखाते हैं, विरोध भी होता है, लेकिन जब ये क्रान्तिकारी कदम समय की कसौटी पर खरे उतरते है तो फिर एक होड़ उठती है उनको अपनाने की। २६०० वर्ष के अन्तराल में हमने इन सिद्धान्तों का उदयमान प्रभाव देखा और विरोध भी। समय की कसौटी पर ये इतने खरे उतरे कि ये केवल परिवार, समाज और राष्ट्रों के लिये ही नहीं वरन् उद्योग और व्यापार के लिये भी एक प्रभावी आचार संहिता का रूप ले चुके

है। हमारी पीढ़ी का यह उत्तरदायित्व है कि वह आगे बढ़े और भगवान् महावीर के इन सिद्धान्तों के पीछे छिपी हुई इस विचारधारा को और सृजनात्मक प्रवृत्तियों को खोज निकालने का प्रयास करे जिनके कारण ये सिद्धान्त आज सार्वभौमिक बन गये हैं। सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् की कल्पना सिर्फ कल्पना ही नहीं है।

उद्योग व्यापार और राष्ट्रों के प्रबन्धक के कुशल चितेरे केवल इसी लोक में यश अर्जित नहीं करते बल्कि आत्मा के चिरंतन सत्य को प्राप्त करने में भी उनके यही सिद्धान्त कारगर होते हैं। निष्ठा और ईमानदारी के साथ इन सिद्धान्तों के आधार पर उद्योग व्यापार चलाने वाला व्यक्ति इसी मार्ग से आत्म कल्याण भी प्राप्त कर सकता है। ये सारी उपलब्धियां व्यक्ति अपने परिश्रम और पुरुषार्थ से प्राप्त करता है उसे किसी बाहरी शक्ति के आश्रय की आवश्यकता नहीं पड़ती। पंच परमेष्ठियों की वाणी का अनुसरण ही उसकी सफलता की कुंजी है।

इस प्रकार हमने देखा कि भगवान् महावीर के ये सिद्धान्त जीव को चिरशान्ति प्रदान करने के साथ-साथ भौतिक सुखों का भी आधार है। इन दोनों क्षेत्रों के बीच वह कौन सी स्थिति है जो पल भर में मानव को भौतिक सुखों से हटा कर मोक्ष की चिर शान्ति प्रदान कर देती है। अपने उच्चतम वैभव पर अधिष्ठित चक्रवर्ती सम्राट भरत इन्ही सिद्धान्तों के अनुसरण से भौतिक ऐश्वर्य से गिरा, सुन्दरता का मोंह पाश टूटा, कान्तिमय त्वचा के नीचे से रुधिर, अस्थि और मांस की कल्पना सामने आयी और क्षण भर में ही केवलज्ञान प्राप्त हो गया। भारतीय इतिहास में ऐसे अनेकों उदाहरण मौजूद है। मोक्ष और भौतिक साधनों को प्राप्त करने के रास्ते एक ही हैं। जब जिस क्षण भौतिकता से विरक्ति होती है उसी क्षण मोक्ष का द्वार खुल जाता है। यह महावीर का विश्व को ऐसा अनूठा संदेश है जो अन्यत्र नहीं मिलता।

तेजस्काय के जीव

डॉ० जीवराज जैन

(भाग—१)

१. जैन आगम में

जैन आगमों में तेऊकाय के स्थावर एकेन्द्रिय जीवों का वर्णन आता है। ये सूक्ष्म और बादर दो प्रकार के बताये गये हैं। सूक्ष्म तेऊकाय को तो पूरे लोक में भरा हुआ माना गया है। हम यहाँ केवल बादल-तेऊकाय को ही समझने का प्रयत्न करेंगे। हालांकि सूक्ष्म तेजस्काय (तेऊकाय) भी अग्निकाय जीवों के बद्ध औदारिक शरीर माने गये है, जो सजीव हैं। लेकिन ये इन्द्रिय-ग्राह्य नहीं होते हैं। उसी प्रकार तेजस वर्गणा के पुद्गल, जो आठ वर्गणाओं में से एक वर्गणा है, भी सम्पर्ण लोक में व्याप्त हैं। लेकिन वे निर्जीव होते है।

१.१. बादर तेजस्काय के बारे में पन्नवणा सूत्र के पद १ में प्रश्न किया गया है कि बादर तेऊकायिक (तेजस्काय) कितने प्रकार के कहे गये है? इसके उत्तर में निम्न प्रकार के तेजस्कायिक बताये गये है।

१.१.(१) इंगाले (अंगार) अंगार कोयले की तेऊकाय, धूम रहित या सहित अग्नि—

१.१.(२) जाला–ज्वाला, संबंध अग्नि, अग्नि से जुड़ी हुई दीप-शिखा

१.१.(३) मुम्मुरे–मुर्मुर (राख से मिले अग्निकण या भोभर)

१.१.(४) अच्ची–अर्चि (अग्नि से पृथक हुई ज्वाला या लपट)

१.१.(५) अलाए–अलात (जलती हुई मशाल या जलती हुई लकड़ी)

१.१.(६) सुद्धागणी–शुद्ध अग्नि (जैसे गर्म लोहे के गोले की अग्नि)

१.१.(७) उक्का–उल्का (उल्का रेखा)

१.१.(८) विज्जू–विद्युत (तड़ित बिजली)

१.१.(९) असणी–अशनि (विद्युत रहित अग्नि)

१.१.(१०) णिग्धाए–निर्धात (कड़क युक्त विद्युत अग्नि–तड़ित् पटाखे।)

१.१.(११) संघारिस समुट्ठिए-संघर्ष समुत्थित (रगड़–संघर्ष से उत्पन्न होने वाली)

१.१.(१२) सूरकंत मणि णिस्सिए-सूर्यकांत मणि निःसृत (सूर्यकांत मणि से उत्पन्न होने वाली अग्नि)

१.१.(१३) जे यावण्णे तहप्पगारा–इसी प्रकार की अन्य अग्नियां।

१.२. उसी प्रकार जीवाजीवा भिगम सूत्र के प्रथम प्रतिपति में भी विज्जू–आकाश में चमकने वाली बिजली, तड़ित् को बादर तेजस्कायिक बताया गया है।

१.३. उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन ३६ की गाथा १११ में उक्का व विज्जू यानि उल्कापात की अग्नि व विद्युत की अग्नि का वर्णन आया है।

१.४. अभिधान राजेन्द्र कोष पृ. २३४७ में तीन प्रकार की अग्निकाय बताई गई है।

१.४.(१) सचित्त (२) मिश्र (३) अचित्त।

१.४.(१) सचित्त के दो भेद–निश्चय और व्यवहार।

१.४.(१) निश्चय सचित्त के अतंर्गत निम्न उदाहरण दिये गये है। ईंट की भट्टी इत्यादि के मध्य की अग्नि और बिजली की अग्नि

१.४.(१) व्यवहार सचित्त अग्नि के निम्न उदाहरण दिये हैं :-

अंगारे (ज्वाला–रहित अग्नि) आदि।

१.४.(२) मिश्र तेजस्काय में–मुर्मुर (चिन्गारियां आदि) का उदाहरण दिया है।

१.४.(३) अचित देजस्काय के निम्न उदाहरण दिये हैं :-

अग्नि द्वारा पके हुए भोजन, तरकारियां, पेय पदार्थ एवं अग्नि द्वारा तैयार की हुई लोहे की सूई आदि वस्तुएं तथा राख, कोयला आदि अचित्त तेजस्काय है।

२. बिजली : २.१. इस प्रकार आगमों में विज्जू यानि आकाश में चमकने वाली तड़ित् यानि विद्युत् को तेजस्कायिक जीव के रूप में माना है। हांलाकि एकेन्द्रिय तेऊकाय के लक्षणों का वर्णन आगम में आता है, लेकिन वे लक्षण और गुण इंद्रियों से जानने के विषय नहीं बताएं गये है। अतः साधारण मनुष्य के लिय मुमकिन नहीं है, कि वो लक्षण व गुण समझकर निर्णय कर सके कि अमुक पदार्थ तेऊकायिक जीव है या नहीं। केवल आगम में वर्णित उदाहरणों से तुलना करके निर्णय लिया जा सकता है। सही तुलना करने के लिए उस अन्य पदार्थ की व दिये गये उदाहरण की सही व सूक्ष्म जानकारी होना, इस संदर्भ से अति आवश्यक है।

२.२. **कृत्रिम बिजली :** आज जो विद्युत का इतना व्यापक उपयोग हो रहा है, वो मानव-निर्मित है। जैसे दावानल प्रकृति से उत्पन्न होती है, लेकिन चूल्हे और भट्टी की अग्नि मानव-निर्मित होती है। वैसे ही तड़ित प्रकृति से बनती है, लेकिन बिजली-घरों में बनी विद्युत मानव निर्मित या कृत्रिम-विद्युत है। हालांकि चूल्हे की अग्नि को जलाने व उपयोग करने की विधि, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने मानव जाति को लाखों वर्ष पहले ही सीखा दी थी, लेकिन कृत्रिम विद्युत को पैदा करके उपयोग में लाने का काम तो वैज्ञानिकों ने कोई दो-तीन सौ वर्ष पहले ही सीखा था। अतः स्वाभाविक है कि कृत्रिम बिजली का वर्णन आगम में नहीं मिलेगा।

कृत्रिम-विद्युत को जीव-अजीव की श्रेणी में रखने के लिए यानि तेजस्कायिक जीव है या नहीं, यह निर्णय करने के लिये अति आवश्यक हो गया है कि आगम वर्णित तेजस्कायिक बिजली (विज्जू) व कृत्रिम-विद्युत की पूर्ण जानकारी ली जाय, उनके विभिन्न पहलुओं का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाये। जिससे सही तुलना कर सकें तथा इसके बारे में अपने निर्णय की गुणवत्ता को उच्चतम रख सकें।

यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि तेऊकाय में जहां आगम में जीव होने के लक्षण बताये हैं, तथा उसको सचित्त एकेन्द्रिय रूप में स्थापित किया है, वहां वैज्ञानिकों के लिये यह अभी तक एक अनबूझी पहेली ही है।

हमारी समझ व कल्पना के बाहर की वस्तु है कि तेऊकाय कैसे सचित्त हो सकती है। आकाश में चमकती तड़ित या चूल्हे में जलती अग्नि के सचित्त होने की भी कोई वैज्ञानिक अवधारणा अभी तक नहीं बनी है।

फिर भी हम आकाशीय बिजली और कृत्रिम बिजली के विभिन्न पहलुओं को और उनकी बनावट को वैज्ञानिक दृष्टि से तथा आज तक की जानकारी के आधार पर समझने की कोशिश करेंगे। जिससे निर्णय लिया जा सके कि कृत्रिम–बिजली भी जीव-अजीव की श्रेणी में किस स्तर पर हैं। इस मुद्दे पर डॉ. कोठारी जैसे प्रसिद्ध विज्ञानक की राय भी साधु संत उद्धरित करते है जिसमें कि उन्होंने स्पष्ट कहा था कि प्रयोगशाला में पैदा की हुई बिजली और आकाश में उत्पन्न तड़ित एक समान है।

यहाँ पर हम जलने की अग्नि का ज्यादा विश्लेषण न करके अपने चिन्तन को केवल आकाशीय विद्युत तथा उसमें होने वाली प्रक्रिया पर ही केन्द्रित रखेंगे।

२.३ **आकाशीय बिजली–** चूंकि आगमकारों के जमाने में कृत्रिम-बिजली नामक कोई चीज विद्धमान न थी, अतः यह मुद्दा अब ज्यादा जटिल हैं। हांलाकि हो सकता है वे अपने ज्ञान में आज की कृत्रिम बिजली को दूष्ट कर रहे हो। आगमविदों ने उस जमाने के लोगों को समझाने के लिए, उन वस्तुओं का ही उदाहरण दिया होगा, जो वे समझ सकें। दैविक शक्ति का उपयोग करके, उन सारी चीजों की कठिन कल्पना करवाने से, जो भविष्य में बनने वाली है, कोई सार्थक लक्ष्य सिद्ध नहीं होता। जो चीज कृत्रिम बिजली के नजदीक बैठती है; वो हैं उस जमाने में भी विद्यमान तड़ित। उन्होंने उस **आकाशीय विद्युत** को सचित्त तेऊकाय के रूप में प्ररूपित किया है। उसका उपरोक्त आगमों में जगह-जगह तेऊकाय के रूप में उदाहरण दिया है। अतः सर्वप्रथम हमें तड़ित को वैज्ञानिक तरीके से समझने की कोशिश करनी चाहिये।

२.३.१.**तड़ित बनने की प्रक्रिया–** आकाश में जो बिजली चमकती है वो क्या है? विज्ञान के अनुसार बादलों में विद्युत आवेश इकट्ठा होता

रहता है। यह आवेश बादलों के बीच आपसी घर्षण और बादल तथा ऊपर उठती हवा के बीच हो रहे घर्षण से पैदा होता है। यह धीरे-धीरे दो अलग कुचालक सतहों पर इकट्ठा होता रहता है। बादलों के किनारों का आवेश, उनके बीच की कुचालक हवा के, उस आवेश को पृथक रखने की क्षमता की सीमा तक पहुंच सकता है। जैसा कि प्रयोगशाला में विम्शर्ट मशीन के दो इलेक्ट्रोड पर आवेश जमा हो जाता है। बादलों के बीच की हवा की एक सीमा होती है, ऋण और धन आवेश को अलग अलग रख सकने की क्षमता सीमा टूट जाने पर वह बादलों के बीच की हवा में विद्युत–निरावेशन पैदा कर देता है। इस निरावेशन में तीव्र ताप, प्रकाश और ध्वनि निकलती है। ऐसा क्यों होता है?

जब हवा के आयनीकरण आवेश की सीमा से ज्यादा आवेश इकट्ठा होता है, तब हवा के अणुओं का विघटन संभव हो जाता है। ये अणु, विघटन द्वारा आयन और इलेक्ट्रोन में बदल जाते है। इस आयनीकरण क्रिया से जो आयनों का मिश्रण बनता है, उसको गर्म-गैस का 'प्लाज्मा' कहते है। उच्च आवेश के प्रभाव से हवा के निष्क्रिय अणु की बाहरी संयोजक कक्ष से 'इलेक्ट्रोन' छिटक कर अलग हो जाते है। इलेक्ट्रोन गतिज् उर्जा धारण करता है तथा छिटकने के कारण, उसकी बॉन्डिंग–उर्जा, ताप और प्रकाश उर्जा में बदलकर उत्सर्जित होती है। इस तरह से उत्पन्न आयन और इलेक्ट्रोन विपरीत दिशा में दौड़कर बादलों की दोनों सतहों पर जमा आवेशों को निरावेशित कर देते हैं। दोनों बादलों की सीमा रेखा, दो इलेक्ट्रोड की तरह काम करती है। इनका आवेश (Potential) इस प्रकिया से शून्य में बदल जाता है। इस संयोजन से उस सतह (सीमा रेखा) पर प्रकाश तो नहीं निकलता है। हांलाकि गतिज् उर्जा के रूपान्तरण से वहां ताप उर्जा बनने की सम्भावना रहती है। इस तरह केवल विघटन के समय ही ताप के साथ प्रकाश का उत्सर्जन होता है। यानि हवा का 'प्लाज्मा' बनने की प्रक्रिया में प्रकाश व ताप निकलता है, तथा उस समय गैस एक लचीला सुचालक माध्यम बन जाती है। यही प्लाज्मा तीव्र रोशनी व आवाज

के साथ हमें तड़ित के रूप में दिखाई देता है। यह 'जलने' की सामान्य रासायनिक क्रिया वाली 'अग्नि' से एक भिन्न प्रकार की 'विशिष्ट' अग्नि है, जिसको 'इलेक्ट्रो–अग्नि' कह सकते हैं।

२.३.२ **तड़ित का बुझना**––आवेश के निरावेशन के साथ ही यह गर्म–प्लाज्मा बुझ जाता है। प्लाज्मा के इस निष्क्रमण में कोई **ताप व प्रकाश** नहीं निकलता है। शेष रह जाती है केवल गर्म हवा, जो विघटन के समय यानि प्लाज्मा बनते समय बहुत ही उच्च तापमान पर पहुंच जाती है ३००० से ६०००°C तक । प्लाज्मा के निष्क्रमण के बाद वहां की उच्च ऊर्जा की उपस्थिति में हवा के घटन पदार्थ, ऑक्सीजन (O_2) और नाइट्रोजन (N_2) आपस में रासायनिक क्रियाएं करते हैं। तथा NO, NO_2, O_3 ओजोन आदि गैस–प्रोडक्ट बनाते हैं। इनके गैसीय अवयवों के आपस में जलने जैसी भी क्रिया हो सकती है। लेकिन ये क्रियाएं उत्तर प्लाज्मा (Post-plasma) की क्रियाएं हैं।

३. **सारांश** : जैसे ताम्बे के तार में (ठोस सुचालक) विद्युत्-प्रवाह हो सकता है, वैसे ही गैस में प्रवाह के लिए प्लाज्मा होना जरूरी है, जो कि लचीले सुचालक की तरह काम करता है। इसी तरह तरल द्रव्य में विद्युत--प्रवाह के लिए आयनीकरण होना आवश्यक होता है। जब हवा के अणु से इलेक्ट्रोन छिटककर (knock-off) पदार्थ का अणु एक आयन में बदल जाता है, तब वहाँ जो ऊर्जा छूटती है उससे तेजस्काय पैदा होता है। यानि आयनीकरण तेजस् योनि बनाने की प्रक्रिया है। उस प्रक्रिया में जब ताप और प्रकाश की ऊर्जा निकलती है, तब वह योनि सचित्त तेजस्काय बनाती है। जैसा कि बादलों में बनते प्लाज्मा में हमने पाया है।

यह आगम में वर्णित आकाशीय दृष्ट तड़ित् विद्युत, बादलों में जमा विद्युत्-आवेशों की ऊर्जा से बना हुआ हवा का प्लाज्मा है। यह प्लाज्मा विद्युत–आवेशों की भौतिक ऊर्जा से बनता है तथा हवा की आयनीकृत यानि पदार्थ की चौथी भौतिक अवस्था रूप है। साधारणतया यह आवेश के प्रभाव से बनता तथा बुझता रहता है। इसको इकट्ठा करके रखने के लिए

विशिष्ट MHD बर्तन (Magneto hydro dynamic container) की जरूरत पड़ती है। ऐसा प्लाज्मा अब कृत्रिम रूप से भी बनाया जा सकता है। जैसे वैल्डिंग करते वक्त, हम लोग आर्क-प्लाज्मा, विद्युत-चाप बनाते है। इसमें साधारण हवा के बजाय धातुओं के ऑक्साइड की हवा रखते हैं जिससे कम वोल्टेज पर प्लाज्मा बन जाता है। यह आयनीकृत कृत्रिम-प्लाज्मा वैसा ही है, जैसा तड़ित् का प्लाज्मा। अतः इसके सचित्त तेजस्काय होने की सम्भावना है। इसी प्रकार जब ट्यूबलाइट में प्लाज्मा बनता है, तो वो भी सचित्त हो सकता है।

लेकिन जैसे ही प्लाज्मा बुझता है तो, सचित्त तेजस्काय तत्क्षण अचित तेजस्काय में बदल जाता हैं।

४. **अहम् प्रश्न** :– प्रश्न उठ सकता हैं कि आगमकारों ने इस प्लाज्मा को सचित्त 'बिज्जु' कहा है, या निरावेशित करती उच्च वोल्टेज पर उसमें प्रवाहित होने वाली बिजली की धारा को? क्योंकि एक दृष्टि से तो प्लाज़्मा उस बहती हुई विद्युत का प्रभाव मात्र है। सुज्ञ जन अपना अपना विवेक लगा कर चिंतन करके निर्णय लें।

मैं केवल इतना कहना चाहूंगा कि आयनीकरण क्रिया में लगाई हुई वोल्टेज (potential) के कारण बने प्लाज़्मा को यदि सचित्त तेऊकाय माना जाय तो हवा–चिन्गारी (air spark), वेल्डिंग का चाप, विद्युत–फर्नेस की आर्क (Arc) भी सचित्त होंगी। बल्ब और हीटर के इस श्रेणी में आने की सम्भावना कम है।

दूसरे विकल्प में जब अचित्त स्थिर-आवेश (static potential) से, जो विद्युत प्रवाह शुरू होता हैं, उसको ही सचित्त माना जाए, तो हर विद्युत–उपकरण में प्रवाहित होती विद्युत सचित्त की श्रेणी में आयेगी।

क्रमशः

श्रीचन्द्रराज चरित्र

उस समय बड़ी तेजी से ठहरो! ठहरो!! करता हुआ अवधूत वहां पहुँच गया। कहने लगा महाराज! आप अधीर न होइयें। महारानी पुत्र सहित सुरक्षित स्थान में विराजमान हैं थोड़े ही दिनों में आप से मिल जायेंगी। उनके कुशल-समाचार तो आपको आठ ही दिनों में प्राप्त हो जायेंगे। आप आठ दिन और प्रतीक्षा करें।

मंत्रियों ने और नागरिकों ने भी यही राय देकर के जोर दिया। राजा जलने से रुक गये। वापस नगर में पधारे! अवधूत को भी साथ ले लिया। योग की चर्चा होने लगी अवधूत ने अपने ज्ञान का खजाना खोल दिया। वह कहने लगा—महाराज!

योगश्चित्तवृत्ति–निरोध

चित्त वृत्तियों के रोकने का नाम योग है। मूर्छित अवस्था में भी चित्तवृत्तियां रुक जाती हैं पर उसे योग नहीं कहा जा सकता। इसीलिये कुछ ज्ञानी आचार्य उपरोक्त योग के लक्षण में-क्लिष्ट–पद को और जोड़ने की सिफारिश करते हैं। अर्थात्—

योगः क्लिष्ट–चित्तवृत्ति–निरोधः

खराब चित्त वृत्तियों को रोकने का नाम योग है।

देखियें गुदा के मूल में चार पांखुड़ियों वाला एक आधार चक्र है। लिंग के मूल में षट्कोण आकार का स्वाधिष्ठान चक्र है। नाभि में दश पांखुड़ियों वाला मणि पूरक चक्र है। हृदय में बारह पांखुड़ियों का अनाहत चक्र हैं। कण्ठ और ग्रीव में-सोलह पांखुड़ियों का विशुद्ध चक्र है। ललाट में बारह अक्षरों का आज्ञा चक्र है।

महाराज के साथ राज योग हठ-योग ध्यान धारणा समाधि आदि योगांगों पर चर्चा करते हुए अवधूत ने अपने ज्ञानी होने की छाप बड़े सुन्दर ढंग से जमा दी। इसीलिये कहा है–ज्ञानं सर्वत्रगं चक्षुः।

एक रोज जयकुमार आदि राजकुमार आपस में एक षड्यंत्र कर रहे थे, कुमार ने अदृश्य रूप से सुन लिया। वे कहते थे-विमाता सूर्यवती के मोह में महाराज मर जाते तो राज अपना होता। पर उस अवधूत ने बचा लिया अब न जाने क्या हो? महाराज के रहते अपने राजा नहीं बन सकते अतः लाख के घर में धोखे से महाराज को और इस शैतान के बच्चे अवधूत को जला देना चाहिये। सब ने ठीक है तय, करके दिन निर्धारित किया।

इधर श्रीचन्द्र ने बड़ी तेजी से लाख के घर के नीचे सुरंग तैयार करवादी और खुद महाराजा की रक्षा में सावधान हो गया। पांचवें दिन जय आदि राजकुमारों ने महाराजा से अनुरोध किया कि पधारियें कैसी अद्भुत कारीगरी हुई है। जैसे ही महाराजा अन्दर गये गुप्त दरवाजे बंद कर दिये गये। आग की लपटें निकलने लगी। महाराज ने कहा यह क्या? अवधूत ने कहा राज्य लोभी कुमारों की यह काली करतूत है, जो आपका प्राण लेना चाहते हैं। महाराजा किंकर्तव्य मूढ हो गये। अवधूत सावधान था ही सुरंग द्वार खोलकर महाराज को निकाल लिया। वे अपने महल के ऊपरी भाग में चले गये। इधर जयकुमार ने भाइयों के साथ राजसभा में प्रवेश करके सर्वत्र कब्जा कर लिया, और खुद राजा की जगह आ बैठा शहर में सन्नाटा छा गया। मंत्री हतबुद्धि हो गये। चारों ओर हाहाकार मच गया।

महाराजा प्रतापसिंह ने अवधूत की सलाह से अपने अंग रक्षक सैनिकों को बुलाया। सैनिक महाराज को जीवित देख बड़े प्रसन्न हुए, और उन्होंने महाराज की आज्ञा से जय आदि राजकुमारों को गिरफ्तार कर लिया। महाराजा राजसभा में आये। अधिकारीगण विस्मित और हर्षित हुए। महाराजा ने अवधूत से कहा-आपने मेरे प्राण बचाकर के आभारित किया है। मेरा आधा राज्य ग्रहण करके मुझे उऋण बनाइयें। पर वह लेने को तैयार नहीं होता।

इधर सातवें दिन सांढनियों की सेना के साथ मंत्री बुद्धिसागर कुशस्थलपुर में आ पहुँचे। महाराज की आज्ञा से उनका राजसभा में प्रवेश हुआ। स्वागत सत्कार के बाद मंत्री बुद्धिसागर ने साथ लाये हुए पत्र महाराजा के सामने पेश किये और कहा कि-महाराज! मैं आपके पुत्र राजा श्रीचन्द्र का मंत्री हूं। बीणापुर से आया हूँ। वहां महारानी सूर्यवती जी अपने पुत्र के साथ सकुशल

हैं। प्रधानमंत्री गुणचंद्र भी वहीं है। उन्हीं के कनकपुर राज्य के मंत्री लक्ष्मण से मिलकर आ रहा हूँ। अभी वहां युद्ध चल रहा है। इसके बाद उसने राजा श्रीचन्द्र और मंत्री गुणचंद्र के विवाह आदि का भी जिक्र किया।

महाराजा ने सेठ आदि के पत्रों को अलग-अलग देकर अपना पत्र पढ़ना शुरु किया। पुत्र की पत्र-लेखन की चतुराई व युक्तियों से वे बहुत प्रसन्न हुए। कवि हरिभट्ट ने श्रीचन्द्र की जीवन घटनाओं को गा गाकर सुनाया। महाराजा ने भी अपने पुत्र और पत्नी के समाचार पाकर भारी प्रसन्नता का अनुभव किया। नगर में कई महोत्सव हुए। गुप्त वेश में वहीं बैठा हुआ कुमार श्रीचन्द्र बहुत प्रसन्न हुआ। धनंजय को कुमार का संदेश था कि चंद्रकला को अपने पीहर से लिवा कर श्रीगिरि पहुँचा देना। ऐसी आज्ञा को पाकर धनंजय शीघ्र ही वहां से चला और रानी चंद्रकला को उनके पीहर से श्री पर्वत पर पहुँचाने गया।

इस प्रकार कुशस्थलपुर में सर्वत्र खुशी का साम्राज्य छा गया।

बसन्त का समय था। आमों पर मँजरियाँ आ रही थीं। उनके रसास्वाद से उन्मत्त होकर कोकिलाएँ पंचम स्वर में आलाप कर रहीं थीं। पतझड़ की समाप्ति से पेड़ों की डालियों में नई नई कोंपलें अपने रंग बिरंगी गुच्छों के साथ बनश्री की शोभा को अनंत रूप में प्रदर्शित कर रही थी। प्राणी मात्र के जीवन में नई उमंगे, नई नई आशाओं के साथ तरंगित हो रहीं थी। ऐसे ही समय में कुशस्थलपुर के राजा का जयकलश नाम का मुख्य हाथी किसी कारण से मदोन्मत्त हो गया वह अपने बंधनों को तोड़कर और महावत को मारकर शहर में दौड़ पड़ा। उसने नगर में छकड़ों और घोड़ा-गाड़ियों को उलट दिया। दुकानें उजाड़ दी। सामने आने वालों को कुचल दिया। सर्वत्र शहर में खलबली मच गई। लोगों की चीख पुकार सुनकर राजा बड़ा दुखी हुआ और अपने सिपाहियों को हुक्म दिया—जाओ, दौड़ो। जैसे बने हाथी को वश में करलो। पकड़ लो।

सिपाही दौड़े। उनको देख हाथी विशेष कुपित हुआ। सारे नगर को उसने तहस नहस कर दिया। सबको कुचलता हुआ वह राजद्वार की ओर आ धमका। सबको अपने जीवन की लगी थी। हाथी के मुकाबले में कोई नहीं आ रहा था। ऐसी अवस्था में अवधूत वेश धारी श्रीचन्द्र कुमार हाथी के

पास गया। सब लोग चिल्लाने लगे। राजा ने भी मना किया। कुमार ने एक की भी न सुनी। उस मदमस्त गजराज के पास जाकर, हाथियों की शिक्षा में निपुण उस अवधूत वेशधारी श्रीचन्द्र ने हाथी को अपने वश में कर लिया। सब के देखते-देखते बड़े मजे से वह उसके कंधे पर जा बैठा। हाथी ने उसे अपनी पीठ से गिराने की बहुत कोशिश की मगर वह अपने स्थान पर डटा ही रहा हाथी उसे बल पूर्वक जंगल में ले भागा! तीन दिन के बाद वह मद रहित होकर शांत हो गया। किसी पहाड़ की तराई में आये हुए तालाब में जल पीने की इच्छा से कुमार नीचे उतरा। तालाब में नहा धोकर, प्यास बुझाकर उसने अपने असली वेश को धारण किया। अनन्तर प्यार से पुचकारते हुए, कुमार उसके पैरों के सहारे उसकी पीठ पर जा बैठा।

महाराजा प्रतापसिंह अपनी सेना को लेकर हाथी के पीछे गये सारी रात श्रीचन्द्र को सब ओर ढूंढा पर वह उन्हें कहीं मिला ही नहीं। आगे पहाड़ी प्रदेश में भी उसकी खोज की। महराजा के अपने सर्वश्रेष्ठ हाथी के चले जाने का उतना कष्ट नहीं हुआ, जितना अवधूत वेशधारी कुमार के चले जाने का हुआ वे कहने लगे—अरे! मुझे प्राण दान देने वाला वह ज्ञानी कितना सच्चा और उपकारी था। मैं तो उसका कोई बदला नहीं चुका सका!! महाराज उसके गुण स्मरण करते हुए कुशस्थल में लौट आये।

इधर उस गजराज की पीठ पर चढ़ा हुआ कुमार श्रीचन्द्र आनन्द से वन-विहार कर रहा था। पास की पहाड़ी पर भीलों की एक पल्ली थी। पल्लीपति ने उसको देखते ही पकड़ने की इच्छा से भील सेना के साथ आकर उसे घेर लिया। जोर से धमकाते हुए वह कहने लगा अरे तू कौन है? कहां जायेगा? यहां क्यों आया है? साथ ही भीलोंने बाण बरसाना शुरु कर दिया। कुमार अपने को बाणों से बचाता हुआ, हाथी द्वारा उखाड़ कर दी हुई वृक्ष शाखाओं और पत्थरों से उन भीलों को मार भगाया।

भीलों को भगा कर तेजस्वी कुमार श्रीचन्द्र एक सघन पेड़ की छाया में विश्राम करने लगा। वहां कहीं से वन विहार करती हुई भील कुमारीकाएं आ पहुँची। भील राज की कन्या मोहिनी कुमार को देखते ही मोहित हो गई। उसने अपने बाप से जाकर कहा कि—पिताजी! मैं तो उस हाथी वाले बहादुर पति को ही स्वीकार करती हूँ। किसी दूसरे को पाने की इच्छा अब है ही नहीं।

भिल्लराज अपनी इकलौती बेटी की इच्छा का ख्याल करके विनीत वेश में कुमार के पास पहुँचा। कहने लगा महापुरुष! आप महान् हैं। हमारे अपराधों के लिये क्षमा करें। इस मेरी पुत्री को स्वीकार कर मुझे आभारी करें। कुमार ने कहा-जब तक आप का डाकुओं का व्यवहार बना रहेगा तब तक मैं आपसे अपना संबंध जोड़ना ठीक नहीं समझता। नीति दुष्कुल से भी स्त्री रत्न को स्वीकारने की प्रेरणा करती है पर मेरे सम्बन्धी होकर आप डाकू बने रहें यह मेरी शान के खिलाफ बात मानता हूँ। अतः मैं आपकी प्रार्थना मंजूर नहीं कर सकता।

भीलराज ने कहा कुमार! परिस्थितियां ही मनुष्य को डाकू बना देती हैं। डाकू बन जाने पर भी क्या हमारे पास दिल नहीं होता? मैं खुद इस धंधे से नफरत करता हूँ, पर क्या करूं लाचार हूँ। पारस को छूकर लोहा जैसे सोना बन जाता है वैसे आप के प्रसंग से मेरा यह पाप भी छुट जायगा ऐसी मेरी दृढ़ धारणा है। आप मेरी प्रार्थना को न ठुकरायें।

भावी लाभ को जानकर कुमार ने कहा कि यदि आज से आप दस्यु-वृत्ति का त्याग करते हैं, तो आपकी कन्या से विवाह करने में मुझे भी इतराज नहीं है। पल्ली पति बड़ा प्रसन्न हुआ, उसने भीलों के साथ डकैती, चोरी, आदि के धंधे का सर्वथा त्याग कर दिया। बड़ी धूम-धाम से कुमार के साथ मोहिनी का विवाह हो गया। दहेज में हाथी, घोड़े, रथ दास दासी मणि-रत्न आदि अपूर्व वस्तुएं भीलराजा ने कुमार श्रीचंद्र को दीं। उसमें अपना सुवेग रथ और उन दिव्य घोड़ों को देखकर कुमार ने पूछा ये आपके हाथ कैसे लगे? भीलराज ने कहा गायक वीणारव हमारे धावे में घोड़े समेत इस रथ को छोड़ भागा था। तभी से यह हमारे कब्जे में है जब से ये घोड़े आये हैं तब से बहुत दुःखी हैं। रातदिन इन की आँखों से आंसू बहते हैं। देखो न? इनकी आँखें कैसी हो रही हैं कुमार! बेटी मोहिनी को दहेज में देने के लिये ही यह मेरा संग्रह है।

भील्लराज के साथ कुमार घोड़ों के पास गया। घोड़े मारे हर्ष के हिनहिनाने लगे अपने सच्चे स्वामी को पहचान कर उनकी कली-कली खिल उठी। पल्ली पति ने कुमार से पूछा कुमार! इनकी इतनी प्रसन्नता का क्या कारण है? कुमार ने कहा—भीलराज! यह सुवेग रथ और ये वायुवेग

और महावेग नाम के घोड़े मेरे ही हैं, मैंने ही जयकुमार के षड्यन्त्र से अनजान वीणारव की याचना पर इन्हें दे दिया था। आज ये मुझे पहचान कर खुशी जाहिर कर रहे हैं। ऐसा कह कर कुमार श्री चन्द्र ने प्यार से पुचकारते हुए घोड़ों की पीठ पर हाथ फेरा और उन्हें थपथपाया। घोड़ों ने नया जीवन पाया।

कुमार ने कहा पल्लिपति! आपका यह सारा दहेज और मेरा यह हाथी अब आप ही संभालें। अभी तो मैं सिर्फ इस रथ को ही लेता हूँ। उसने भीलराज के सिपाहियों में से कुंजर नाम के क्षत्रिय कुमार को अपना सारथी चुना। अपनी नाम मुद्रिका दिखाते हुए अपना संक्षिप्त परिचय भी दे दिया। यह श्रीचन्द्र कुमार है ऐसा जानकर भीलराज बड़ा ही खुश हुआ।

क्रमशः

तित्थयर

संवादपत्र रजिस्ट्रेशन (केन्द्रीय विधि (१९५६) के ८ नम्बर धारा के अनुसार निवृत्ति :

प्रकाशन स्थान	:	कोलकाता
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	लता बोथरा (भारतीय)
ठिकाना	:	पी० २५, कलाकार स्ट्रीट
		कोलकाता - ७०० ००७
प्रकाशक का नाम	:	लता बोथरा
ठिकाना	:	पी० २५, कलाकार स्ट्रीट
		कोलकाता - ७०० ००७
सम्पादक का नाम	:	लता बोथरा
	:	पी० २५, कलाकार स्ट्रीट
ठिकाना		कोलकाता - ७०० ००७
सत्वाधिकारी का नाम	:	जैन भवन
ठिकाना	:	पी० २५, कलाकार स्ट्रीट
		कोलकाता - ७०० ००७

मैं, लता बोथरा, घोषणा करती हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे ज्ञान एवं विश्वासानुसार सत्य है।

लता बोथरा

१५/०४/२००४

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

CALTRONIX
12 India Exchange Place
3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

CLUB BITES
Vegetarian Restaurant
At
Lee Road
Call - 2280 1582

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 2282-4649, (Resi) 2247-2670

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
87, S.N. Pandit Road
Kolkata - 700 025
Phone: 2455-2081, 2454-7127
Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandani Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140
(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Phone : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653
Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road,. PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre
19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535
Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63,Burtala Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2269-6241/2950 (O) 2239-0581

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

GOUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071
Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane,
Kolkata - 700 006
Phone: (O) 2259-3885, (R) 2259-2556
(M) 9831067218

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane
Kolkata - 700 007
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019
Phone : 2287-0448

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PHONES : 2220 5059 / 2220 1130
EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2268-4755, (Resi) 2274-0817

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 2247-7880, 2247-8663
(Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007,
Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street
Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2270 0432, 2522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50^0 C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 2514-4496, 2513-1086, 2513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Stop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

—जैसा चाहो वैसा बन जाओ—

एक जन्म में मनुष्य जैसा विचार करता है वैसा ही वह दूसरे जन्म में होता है। इस नियम से हमें अपनी मानसिक प्रकृति कैसी बनानी चाहिये, यह कार्य हमारा ही है। यदि मनुष्य का आचरण अच्छा है तो उसका यश व लाभ उस को है। यदि उसका आचरण बुरा है तो इसका दोष भी उसी को है।

तुमको अपने चरित्र में सद्‌गुण बढ़ाने हों और दुर्गुणों का नाश करना हो तो दुर्गुणों के विरोधी सद्‌गुणों का चिन्तन करो। अभियान और लोभ को दूर करने के लिए नम्रता तथा त्याग का चित्र अपने हृदय पर अंकित करो। अथवा उन गुणों को धारण करने वाले किा महापुरुष का आदर्श जीवन अपने सामने रखो। उसके अन्दर रहने वाली दया, उसके कोमल स्वभाव और दयालु जीवन का विचार करो। इस भावना से उस महान् शक्ति के साथ तुम्हारा अन्तरीय सम्बन्ध जुड़ेगा।

With Best Compliments

B.C. JAIN JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006
Vol. XXVIII. NO.1. TITTHAYARA April 2004
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225